❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 43, अंक 50 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 नवम्बर, 2020 से रविवार 15 नवम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

137वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) पर विशेष

हे महर्षि दयानन्द सरस्वती! तुम्हें शत-शत नमन

दीप जले पर, दीप जलाने वाला..........

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 137 वें निर्वाण दिवस पर हम आर्यजन उन्हें शत-शत नमन करते हैं, अपने श्रद्धा सुमन अर्पण करते हैं, उनके विशाल-विराट बहुआयामी व्यक्तित्व से प्रेरणा प्राप्त करने का संकल्प धारण करते हैं, उनके बताए सत्य के मार्ग पर चलने का पूरा प्रयास करते हैं, राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के लिए समर्पित होने का व्रत लेते हैं, यज्ञ-योग-स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना की नियमित पालना की प्रतिज्ञा करते हैं। ऋषि ने मानवजाति के ऊपर जो अनगिनत उपकार किए उन्हें सहर्ष स्मरण करते हैं, हमारा प्यारा ऋषि, सबसे न्यारा ऋषि, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति ऋषि, जिसने संपूर्ण विश्व को असत्य से सत्य की ओर, अंधेरे से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की चलने का रास्ता दिखाया, लोकोपकारी महान कार्यों को करने के लिए कठिन तप-त्याग-साधना की, ऐसे ऋषिवर का न समझ लोगों ने बार-बार अपमान किया, उनके विरुद्ध अनेकानेक षड़यंत्र रचे, ईट और पत्थर मारे, प्राण घातक प्रहार

किए, उन्हें विषपान तक कराया, किन्तु गौरव इस बात का होता है कि सत्य और न्याय के पथ पर चलने वाले, विष पीकर भी मानव समाज को अमृत पिलाने वाले, अपने जीवन का पल-पल मानवता को जीवंत करने के लिए समर्पित करने वाले ऋषिवर के हम अनुयाई हैं, एक ऐसे ऋषि के अनुयाई हैं जो कहता है कि **"विरोध की आंच से सत्य की कांति चौगुना चमकती है" दयानंद को यदि कोई तोप के मुंह के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है? तब भी उसके मुंह से से वेद की श्रुति ही निकलेगी।** ऐसे सत्य पर दृढ़ संकल्पित ऋषि दयानंद का अनुयाई होना सबसे **बड़े गौरव की बात** है।

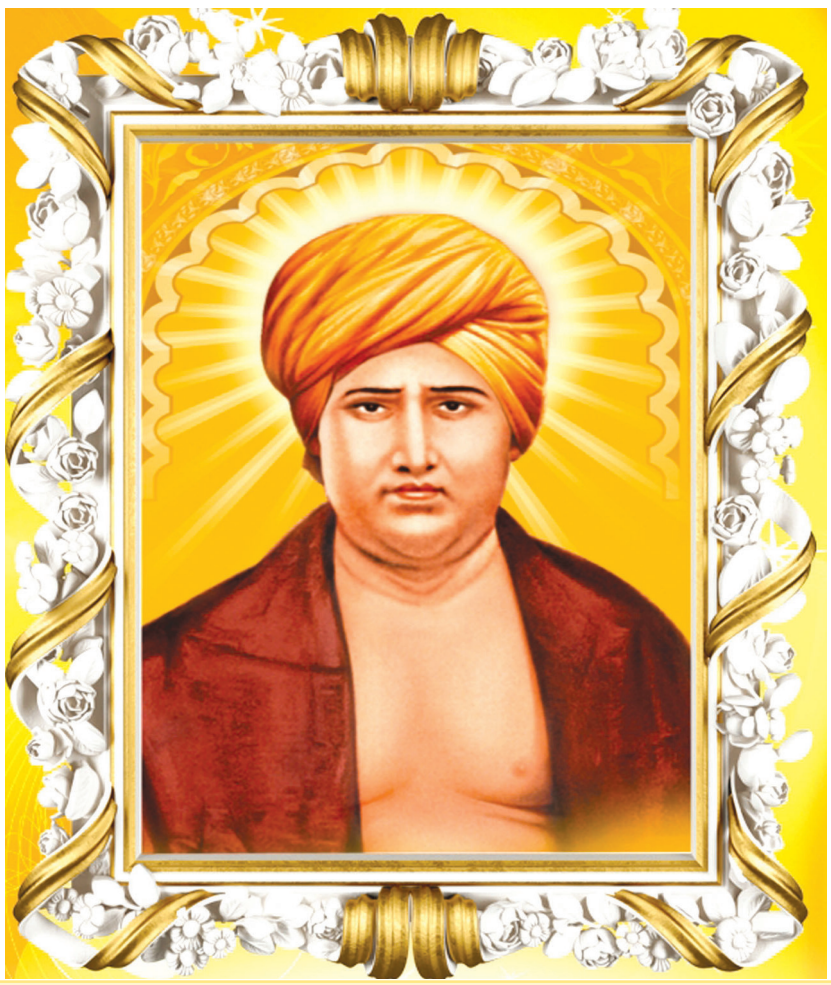

सत्य और न्याय की प्रतिष्ठा के लिए अडिग ऋषिवर का अविराम संघर्ष जीवन भर चलता रहा। ऋषि के जीवन से जुड़ी घटनाओं का अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि ईश्वर विश्वासी, राष्ट्रभक्त, मानवता के हितैषी महापुरुष को अज्ञान-अविद्या रूपी अंधकार के तिरोहण में कितना कुछ सहना पडता है। महर्षि दयानंद सरस्वती

- शेष पृष्ठ 4 पर

.....ऋषि ने मानवजाति के ऊपर जो अनगिनत उपकार किए उन्हें सहर्ष स्मरण करते हैं। हमारा प्यारा ऋषि, सबसे न्यारा ऋषि, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति ऋषि, जिसने संपूर्ण विश्व को असत्य से सत्य की ओर, अंधेरे से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की चलने का रास्ता दिखाया, इस लोकोपकारी महान कार्य को करने के लिए कठिन तप-त्याग-साधना की, ऐसे ऋषिवर का न समझ लोगों ने बार-बार अपमान किया, उनके विरुद्ध अनेकानेक षड़यंत्र रचे, ईंट और पत्थर मारे, प्राण घातक प्रहार किए, उन्हें विषपान तक कराया, गौरव इस बात का होता है कि सत्य और न्याय के पथ पर चलने वाले, विष पीकर भी मानव समाज को अमृत पिलाने वाले, अपने जीवन का पल-पल मानवता को जीवंत करने के लिए समर्पित करने वाले ऋषिवर के हम अनुयाई हैं, एक ऐसे ऋषि के अनुयाई हैं जो कहता है कि "विरोध की आंच से सत्य की कांति चौगुना चमकती है" दयानंद को यदि कोई तोप के मुंह के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है? तब भी उसके मुंह से से वेद की श्रुति ही निकलेगी। ऐसे सत्य पर दृढ़ संकल्पित ऋषि दयानंद का अनुयाई होना सबसे बड़े गौरव की बात है।......

1966 के गौरक्षा आन्दोलन की स्मृति में धरना प्रदर्शन

राष्ट्र निर्माण पार्टी एवं आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने की गौरक्षा कानून बनाने की मांग

नई दिल्ली: 7 नवंबर 1966 के दिन गौ रक्षा आंदोलन में बलिदान हुए लोगों की स्मृति और गौ रक्षा के संकल्प को लेकर शनिवार 7 नवंबर 2020 को जंतर-मंतर पर एक विशाल प्रदर्शन आयोजित किया गया। आर्य समाज और राष्ट्र निर्माण पार्टी के द्वारा आयोजित इस प्रदर्शन की अगुवाई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य और राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा की गई। इस मौके पर दिल्ली और उसके आस-पास के इलाकों से सैकड़ो आर्य कार्यकर्ता जंतर-मंतर पहुंचे।

जन समूह को संबोधित करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य ने 1966 के गौ रक्षा आंदोलन के बलिदानियों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आज हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम सब मिलकर गौ रक्षा के लिए सदा तत्पर रहे और आर्य समाज जिस प्रकार 1966 के इस आंदोलन के लिए सक्रिय भूमिका में रहा उसी सक्रिय भूमिका में आज भी गौरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

वेद-स्वाध्याय

असुरों को दूर करो!

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात्।। *-यजुः० 2/30*
ऋषिः **वामदेवः**।। देवता - **अग्निः**।। छन्दः **भुरिक्पङ्क्तिः**।।

शब्दार्थ - **ये** = जो **रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना**= अपने रूपों को छिपाकर, रोचक रूपों को दिखलाते हुए **असुराः सन्तः** = असुर, राक्षस होते हुए भी **स्वधया** = अन्न से, रस से, स्थूल पार्थिव-शक्ति से (युक्त होकर इस लोक में) **चरन्ति** = विचरते हैं और **ये** = जो **परापुरः** = धर्म से दूर हटकर अपने- आपको पूरते हैं **निपुरः** = नीचे गिरकर निकृष्ट उपायों से भी अपने को पूरते हैं **भरन्ति** = इस प्रकार अपने को भरते हैं या दूसरों को हरते हैं **तान्** = उन (छिपे असुरों) को **अग्निः** = तेजोमय संतापक अग्नि **अस्मात् लोकात्** = इस लोक से **प्रणुदाति** = दूर कर देवे, हटा देवे।

विनय - हे जगदीश्वर! यहाँ से असुरों को दूर कर दो, प्रच्छन्न असुरों को दूर भगा दो। यह लोक, यह स्थान तो देवों के लिए है। इस मेरे अध्यात्म, अधिभूत और अधिदेव लोक में दैवभाव, दैव मनुष्य, दैवी शक्तियाँ ही रहनी चाहिएँ, किन्तु हे अग्ने! आसुर भाव, असुर लोग, आसुरी शक्तियाँ भी यहाँ आ घुसती हैं। ये असुर अपने नग्नस्वरूप में तो यहाँ आ नहीं सकते, इसलिए ये अपने अज्ञान, अधर्म, अनैश्वर्य के असली स्वरूपों को छिपाकर ज्ञान, धर्म और ऐश्वर्य के रूपों को दिखलाते हुए यहाँ आते हैं। अपने असली दुर्भावों को अन्दर दबाकर अपने को बड़े सद्भावों से प्रेरित हुए प्रकट करते हैं। अपने स्वार्थपूर्ण अभिप्रायों को इस प्रकार उच्च सिद्धान्तों में लपेटकर लोगों के सामने पेश करते हैं कि लोग इन्हें 'देव' समझते हैं, इसीलिए असुर होते हुए भी ये यहाँ की 'स्वधा' को प्राप्त करते हैं, यहाँ के अन्न से, रस से, स्थूल पार्थिव शक्ति से युक्त होकर ये विचरते हैं, परन्तु अन्दर से ये बिलकुल असुर होते हैं, अशोभन, बुरे पुरुष होते हैं। यज्ञ का, श्रेष्ठ संगठन का ध्वंस करनेवाले होते हैं। वसुओं में (प्राणों में) ही रमनेवाले इन्द्रिय-भोगरत होते हैं। इसलिए ये स्वार्थी लोग सदा अपने ही पेट भरने में लगे रहते हैं। ये 'परापुर्' और 'निपुर्' होते हैं, धर्म से बहुत दूर होकर, बिलकुल विमुख होकर भी अपने-आपको भरते हैं और धर्म से नीचे गिरकर निकृष्ट उपायों से भी अपने को भरते हैं। अधर्म, अन्याय द्वारा दूसरों को हरते हुए और अपने स्वार्थों को पूरा करते हुए, किन्तु ऊपर से अपने-आपको धार्मिक, सच्चे दिखलाते हुए ये असुर इस लोक में धन-सुख-यश पाते हुए विचरते हैं। इसलिए हे अग्ने ! इन प्रच्छन्न असुरों को, जोकि खुले असुरों की अपेक्षा बहुत भयङ्कर होते हैं, इस पवित्र लोक से दूर कर दो। निःसन्देह तेरी सन्तापक शक्ति के सामने ये ठहर नहीं सकते, तेरे तेज को यह सह नहीं सकते, अतः अब इन असुरों को यहाँ से बहिष्कृत कर दो और इस स्थान को, इस समाज को, इस पवित्र संगठन को असुररहित कर दो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

अमेरिका में नए राष्ट्रपति का चुनाव एवं उनका भारत पर प्रभाव

जो बायडेन भारत के लिए कितना बड़ा खतरा ?

वर्ष 1942 में पेनसिल्वेनिया राज्य के स्क्रैंटन में जन्मे जोसेफ रॉबिनेट बायडेन उर्फ जो बायडेन जूनियर ने अमेरिका चुनाव में राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार के तौर पर ऐतिहासिक जीत हासिल कर ली है। 36 साल सीनेटर और 8 साल अमेरिका के उपराष्ट्रपति रहने वाले बायडेन का जीवन यूँ तो बेहद उतार चढ़ाव वाला रहा। पहली बार 1988 में उन्होंने राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी की दौड़ से खुद को ये कहते हुए बाहर कर लिया था कि उन्होंने ब्रिटिश लेबर पार्टी के नेता नील किनॉक के भाषण की नकल की थी। जो बिडेन के समर्थक विदेश नीति को लेकर उनकी समझ को लेकर कायल रहते हैं। उनके पास करीब पांच दशकों के राजनीतिक अनुभव के साथ-साथ कूटनीति का भी लंबा अनुभव है। ये उनकी सबसे बड़ी ताकत के तौर पर भी राजनीति के मैदान में दिखाई पड़ती है लेकिन कुछ लोग उन्हें भारत के सामरिक राजनितिक हित के लिए अच्छा नहीं मान रहे हैं।

हालाँकि विदेश नीति के जरा से भी जानकर इस बात को बखूबी समझते हैं कि अमेरिका के राष्ट्रपति बदलते हैं लेकिन नीतियाँ नहीं बदलती। दूसरा कोई भी देश किसी देश का मित्र नहीं होता, दो देशों के सम्बन्ध रिश्ते भावनाओं पर नहीं आपसी लाभ और व्यापार पर टिके होते हैं। आज भारत और अमेरिका के रिश्ते भी इसी व्यापार और फायदे पर टिके हैं। रही बात जो बायडेन की तो बायडेन अपने चुनाव प्रसार के दौरान भारतीय-अमेरिकियों से संपर्क किया। वह भारत के लिए उदार सोच रखते हैं। चूंकि अमेरिका और भारत के रिश्ते अब संस्था गत हो चले हैं, ऐसे में उसमें बदलाव कर पाना मुश्किल होगा।

अमेरिका के नए राष्ट्रपति जो बायडेन भारत के लिए बहुत अच्छे मित्र साबित हो सकते हैं। वो शुरू से ही भारत और अमेरिका के सम्बन्ध को मजबूत कर रहे हैं। उन्होंने साल 2008 में भी दोनों देशो में भारत को असैन्य परमाणु समझौते के लिए सीनेट की मंजूरी दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और आतंकवाद खत्म करने में कई विधेयकों का उन्होंने समर्थन भी किया।

बायडेन सीनेट की विदेशी संबंध समिति के अध्यक्ष थे और उन्होंने असैन्य परमाणु समझौते के दौरान भारत के एक महत्वपूर्ण सहयोगी के तौर पर मौजूद थे। वर्ष 2001 में जो बायडेन ने त्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश को पत्र लिखकर भारत पर लगे प्रतिबंधों को हटाने की मांग की थी। असैन्य परमाणु समझौता दोनों मजबूत लोकतंत्रों के बीच संबंधों को और गहरा करने के लिए एक नींव साबित हुआ।

इसके अलावा अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के कार्यकाल में बायडेन उपराष्ट्रपति थे और उन्होंने भारत अमेरिका के सम्बन्ध बनाने में विशेष भूमिका निभाई थी। ओबामा के कार्यकाल में हिंद-प्रशांत साझेदारी शुरू हुई थी जिसे ट्रम्प के आने बाद और मजबूती प्रदान हुई। भारत के 74वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर भारतीय-अमेरिकी समुदाय को संबोधित करते हुए बायडेन ने कहा था कि अगर वह राष्ट्रपति चुनाव जीतते हैं तो भारत के सामने मौजूद खतरों से निपटने में उसके साथ खड़े रहेंगे।

सिर्फ इतना ही नहीं बायडेन ने कहा था कि मैं 15 साल पहले भारत के साथ ऐतिहासिक असैन्य परमाणु समझौते को मंजूरी देने की कोशिशों की अगुवाई कर रहा था। मैंने कहा कि अगर भारत और अमेरिका करीबी दोस्त और सहयोगी बनते हैं, तो दुनिया ज्यादा सुरक्षित हो जाएगी।

हाँ कुछ सवाल जरुर है, जैसा ट्रंप के मामले कह सकते हैं कि ट्रम्प का रुख साफ था लेकिन बायडेन बोलते कम और करते ज्यादा हैं। कारोबार से लेकर एच 1 बी वीजा, अमेरिका में भारतीयों को मिलने वाली नौकरियों, रक्षा भागीदारी, पाकिस्तान को लेकर अमेरिका का रुख, चरमपंथ, ईरान को लेकर फैसले, कश्मीर पर रुख जैसे ऐसे कई अहम पहलू हैं जिन पर बाइडन की अगुवाई में बनने वाला नया प्रशासन किस तरह का रवैया रखता है यह देखना भारत के लिए बेहद अहम होगा। क्योंकि जब किसी भी देश की सरकार बदलती है तो कुछ पल को नीतियों में ठहराव आ जाता है क्योंकि नई सरकार एक बार अपने राष्ट्र का हित अपने वोट बैंक का हित जरूर देखती है।

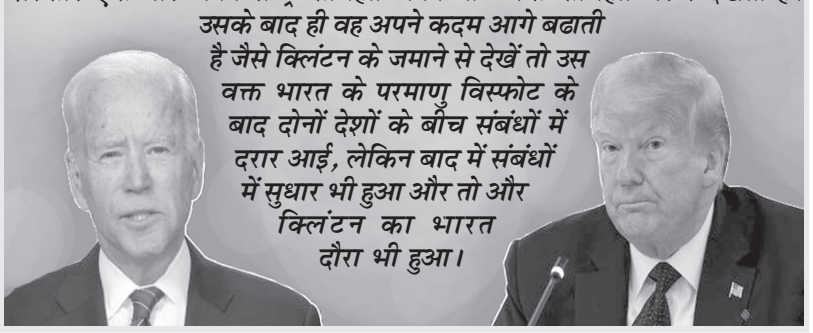

ट्रंप के मामले कह सकते हैं कि ट्रम्प का रुख साफ था लेकिन बायडेन बोलते कम और करते ज्यादा हैं। कारोबार से लेकर एच 1 बी वीजा, अमेरिका में भारतीयों को मिलने वाली नौकरियों, रक्षा भागीदारी, पाकिस्तान को लेकर अमेरिका का रुख, चरमपंथ, ईरान को लेकर फैसले, कश्मीर पर रुख जैसे ऐसे कई अहम पहलू हैं जिन पर बाइडन की अगुवाई में बनने वाला नया प्रशासन किस तरह का रवैया रखता है यह देखना भारत के लिए बेहद अहम होगा। क्योंकि जब किसी भी देश की सरकार बदलती है तो कुछ पल को नीतियों में ठहराव आ जाता है क्योंकि नई सरकार एक बार अपने राष्ट्र का हित अपने वोट बैंक का हित जरूर देखती है। उसके बाद ही वह अपने कदम आगे बढाती है जैसे क्लिंटन के जमाने से देखें तो उस वक्त भारत के परमाणु विस्फोट के बाद दोनों देशों के बीच संबंधों में दरार आई, लेकिन बाद में संबंधों में सुधार भी हुआ और तो और क्लिंटन का भारत दौरा भी हुआ।

यहां तक कि राष्ट्रपति बुश के जमाने में न्यूक्लियर वाले सबसे विवादित मसले पर ही दोनों देशों के बीच डील भी हो गई। बाद में ओबामा दो बार भारत आए, ट्रंप का भी दो बार भारत दौरा हुआ। हाँ ये जरूर है कि डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन दोनों पार्टियों में विदेश नीति में एक कॉन्टिन्यूटी जारी रही है लेकिन अब के वैश्विक हालात देखें तो बायडेन के आने के बाद इसमें कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा। हालांकि, ट्रंप और बायडेन अलग-अलग पर्सनैलिटी हैं, ऐसे में जाहिर है कुछ चीजों में अंतर होगा, लेकिन बड़े मसलों में कोई अंतर नहीं आएगा।

चार साल पहले किसे पता था बल्कि ये कहा जा रहा था कि ट्रंप पता नहीं क्या करेंगे, भारत के लिए ट्रंप का रवैया कैसा रहेगा, लेकिन बाद में ट्रंप ने अपनी विदेश नीति में भारत को अहम भूमिका दी। क्योंकि अमेरिका चाहता है कि भारत एक बड़ी भूमिका निभाए। ऐसा ही ओबामा के समय भी हुआ था क्योंकि जिस तरह चाइना नंबर एक की दौड़ की शक्ति बनने की कोशिश में लगा है ऐसे में ट्रम्प हों बायडेन भारत से दूरी बनाकर काम चल जाये।

- शेष पृष्ठ 7 पर

पत्रकारिता की स्वतन्त्रता पर खतरे की दस्तक

क्या पत्रकारिता का गला दबाया जा रहा है?

.....सबसे पहले इंडियन एक्सप्रेस और द स्टेटमैन ने विरोध स्वरूप अपने संपादकीय वाले हिस्से को खाली छोड़ दिया। इसका अनुसरण बहुत से प्रकाशनों ने किया। टाइम्स ऑफ लंदन, द वाशिंगटन पोस्ट, द लोस एंजलिस टाइम्स के पत्रकारों को देश से निष्कासित कर दिया। द गार्डियन और द इकनोमिस्ट के पत्रकारों को लगातार जान से मारने की धमकियां दी गईं, तो वे अपने मुल्क वापस लौट गए। बीबीसी के मशहूर पत्रकार मार्क टली को भी हटा दिया गया। इसके बावजूद कांग्रेस का पसंदीदा मीडिया का एक वर्ग बेखौफ रहा, पुरस्कृत होता रहा। इनमें से तमाम तो ऐसे थे, जिन्होंने आपातकाल की तारीफ के पुल बांधे। मजबूर लालकृष्ण आडवाणी को कहना पड़ा था, आपसे सिर्फ झुकने के लिए कहा गया था, लेकिन आप तो रेंगने लगे।.....

सा जितना पुराना इतिहास पृथ्वी का है उससे ज्यादा पुराना इतिहास चापलूसी का है। कमाल की बात ये है कि जो इसे करता है, उसे ये दिखाई नहीं देती और जिसके लिए चापलूसी की जा रही होती है उसे महसूस नहीं होती। प्रसिद्ध लेखक हरिशंकर परसाई का ये कथन महाराष्ट्र में कांग्रेस के कदमों में बिछे उद्धव पर सटीक बैठता है। अर्नब करोड़ो हिन्दुओं की बात उठा रहा था, अर्नब पालघर कांड पर बोल रहा था, अर्नब कंगना के साथ हुई तानाशाही के खिलाफ खड़ा था। अर्नब सुशांत सिंह केस को लेकर सरकार की कार्यवाही पर लगातार मुखर था लेकिन अर्नब की आवाज दबा दी गयी। जब टीआरपी वाले फर्जी मामले में अर्नब का कुछ नहीं बिगड़ा तो सत्ता की कलम एक बेखोफ पत्रकार की गिरफ्तारी पर चल गयी और रिपब्लिक मीडिया नेटवर्क के प्रमुख व जाने-माने टीवी पत्रकार अर्नब गोस्वामी को मुंबई पुलिस ने किसी गुंडे की तरह गिरफ्तार कर लिया गया। अर्नब की शैली पर सवाल उठाये जा सकते हैं लेकिन मुद्दों पर नहीं।

असल में दो साल पहले 52 वर्षीय इंटीरियर डिजाइनर अन्वय नाइक और उनकी माँ कुमुद नाइक ने कथित तौर पर खुदकुशी कर ली थी। अन्वय नाइक ने अपने खुदकुशी नोट में आरोप लगाया था कि वो और उनकी माँ ने इसलिए जीवन खत्म करने का फैसला लिया क्योंकि अर्नब के साथ फिरोज शेख और नितेश सारदा ने करीब साढ़े पांच करोड़ रुपए का भुगतान नहीं किया था। 2019 में रायगढ़ पुलिस ने कोई सबूत नहीं मिलने पर इस मामले को बंद कर दिया था। अब अर्नब की सबसे बड़ी गलती ये रही कि उसने सोनिया को उसके बचपन के नाम से पुकारकर खुलकर एंटोनिया माइनो बोल दिया। नतीजा मारपीट, परिवार के सदस्यों के साथ बेअदबी। सब बिल्कुल ठेठ पुलिसिया अंदाज में और साफ शब्दों में कहें, तो ठेठ कांग्रेसी अंदाज में क्योंकि कांग्रेस का एक अपना पसंदीदा मीडिया है, इसे आप पद्म पुरस्कार मीडिया भी कह सकते हैं। सत्ता का बेशर्म दुरुपयोग आज पूरा देश देख रहा है और सोनिया गांधी अपने बयानों में सरकार को अभिव्यक्ति की आजादी की शिक्षा दे रही हैं।

क्योंकि यहाँ तो बोलने की आजादी कन्हैया कुमार को है, शरजील इमाम, उमर खालीद को देश विरोधी नारे लगा सकता है, आजम खान भारत माता को डायन कह सकता है और कांग्रेस का सांसद संदीप दीक्षित आर्मी चीफ को गली का गुंडा कह सकता है। लेकिन अगर कंगना बोलेगी तो घर तोड़ दिया जायेगा और अर्णब गोस्वामी बोलेगा तो 14 दिन के लिए रिमांड पर भेज दिया जायेगा।

पिछले दिनों प्रशांत नाम के एक कथित फ्रीलांसर पत्रकार ने 6 जून 2019 को एक वीडियो ट्विटर पर शेयर किया जिसका उद्देश्य योगी जी के निजी और सार्वजनिक जीवन पर कालिख पोतना था। जिसके बाद 7 जून को लखनऊ के हजरतगंज कोतवाली में एसआई विकास कुमार ने प्रशांत के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। जैसे ही एफआईआर हुई समस्त लेफ्ट गैंग रवीश से लेकर सोनिया तक उमर खालिद से लेकर ओवैसी तक सब मैदान में कूद पड़े और अगले 24 घंटे में सुप्रीम कोर्ट से प्रशांत की जमानत मंजूर करा दी। लेकिन आज केन्द्र सरकार बिलकुल निसहाय सी नजर आ रही है जैसे उसके हाथ में कुछ नहीं है। लेकिन 1992 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने बीजेपी की चार राज्यों की सरकार निरस्त कर दी थी! कांग्रेस से कुछ तो सीखो भाजपा वालो कहीं ऐसा ना हो लोग आपके पक्ष में ही खड़ा होना बंद कर दे।

ये जो हुआ ये कुछ भी नया नहीं है लोकतंत्र के काले दिन यानी आपातकाल को कौन भूल सकता है, नेहरु जी ने संविधान में पहले संशोधन से नींव रख दी थी या कहो पत्रकारिता का गला घोट दिया था। बेटी इंदिरा गांधी ने पिता की विरासत को आगे बढ़ाया। सत्ता जाने के डर से इंदिरा ने देश पर आपातकाल थोप दिया। नतीजा आपातकाल में 3801 के अखबारों के डिक्लेरेशन जब्त कर दिए गए। 327 पत्रकारों को आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था अधिनियम मीसा एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। मई 1976 तक अलग-अलग आरोपों में कुल 7000 मीडिया कर्मियों को गिरफ्तार किया गया। 290 अखबारों के विज्ञापन रोक लिए गए, जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचना शुरू हुई तो टाइम्स और गार्डियन जैसे विदेशी समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों को देश छोड़कर जाने के लिए कह दिया गया। रायटर्स समेत तमाम महत्वपूर्ण समाचार एजेंसियों के टेलेक्स और फोन काट दिए गए। जिस दिन आपातकाल की घोषणा हुई इसके बाद अगले दो दिन तक अखबार के दफ्तरों पर छापे पड़ते रहे। दो दिन तक देश की जनता तक अखबार ही नहीं पहुंचने दिया गया। अखबारों में खबरों को सेंसर करने के लिए चीफ प्रेस एडवाइजर पद बनाया गया।

यानि चीन की तरह बिना चीफ प्रेस एडवाइजर अनुमति के कुछ नहीं छापा जा सकता था। सबसे पहले इंडियन एक्सप्रेस और द स्टेटमैन ने विरोध स्वरूप अपने संपादकीय वाले हिस्से को खाली छोड़ दिया। इसका अनुसरण बहुत से प्रकाशनों ने किया। टाइम्स ऑफ लंदन, द वाशिंगटन पोस्ट, द लोस एंजलिस टाइम्स के पत्रकारों को देश से निष्कासित कर दिया। द गार्डियन और द इकनोमिस्ट के पत्रकारों को लगातार जान से मारने की धमकियां दी गईं, तो वे अपने मुल्क वापस लौट गए। बीबीसी के मशहूर पत्रकार मार्क टली को भी हटा दिया गया। इसके बावजूद कांग्रेस का पसंदीदा मीडिया का एक वर्ग बेखौफ रहा, पुरस्कृत होता रहा। इनमें से तमाम तो ऐसे थे, जिन्होंने आपातकाल की तारीफ के पुल बांधे। मजबूर लालकृष्ण आडवाणी को कहना पड़ा था, आपसे सिर्फ झुकने के लिए कहा गया था, लेकिन आप तो रेंगने लगे।

1988 की बात है, राजीव गांधी का जादू देश के सिर से उतर चुका था। बोफोर्स के दाग दामन पर गहराते जा रहे थे। देश में आंदोलन खड़ा हो रहा था। अमिताभ बच्चन तक इस घोटाले में शरीक बताये जा रहे थे मीडिया मुखर था अचानक राजीव गांधी सरकार देश के मीडिया पर अंकुश लगाने वाला बिल लेकर आई। कांग्रेस की सरकार को उस समय प्रचंड बहुमत हासिल था। बिल का उद्देश्य मानहानि की आड़ में मीडिया की स्वतंत्रता को कुचलना था।

दरअसल ये भ्रष्टाचार के खिलाफ मीडिया की अति सक्रियता का दौर था। इस बिल को लाने से पहले मीडिया को खामोश करने के लिए राजीव सरकार हर हथकंडा इस्तेमाल कर चुकी थी। यह बिल लोकसभा से पास हो गया, लेकिन कुछ महीने बाद ही राजीव गांधी को बढ़ते विरोध के चलते इसे वापस लेना पड़ा।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

धर्म धुन में मग्न - लगन कैसी लगी

कुछ वर्ष पूर्व की बात है। दयानन्द मठ दीनानगर के वयोवृद्ध कर्मठ साधु स्वामी सुबोधानन्दजी ने देहली के लाला दीपचन्दजी के ट्रस्ट को प्रेरणा देकर सत्यार्थप्रकाश के प्रचार-प्रसार के लिए उन्हीं का साहित्य और उन्हीं का वाहन मँगवाया। स्वामीजी उस वाहन के साथ दूर-दूर नगरों व ग्रामों में जाते।

वर्षा ऋतु थी। भारी वर्षा आई। नदियों में तूफान आ गया। बहुत सवेरे उठकर स्वामी सुबोधानन्द शौच के लिए खेतों में गये। लौट रहे थे तो मठ के समीप बड़े पुल से निकलकर गहरे चौड़े नाले में गिर गये। वृद्ध साहसी साधु ने दिल न छोड़ा। किसी प्रकार से उस बहुत गहरे पानी में से पुल के नीचे से निकल गये और बहुत दूर आगे जाकर जहाँ पानी का वेग कम था, बाहर निकल आये। पगड़ी गई, जूता गया। मठ में आकर वस्त्र बदले किसी को कुछ नहीं बताया।

किसी और का जूता पहनकर वाहन के साथ अँधेरे में हीं चल पड़े। जागने पर एक साधु को उसका जूता न मिला। बड़े आश्चर्य की बात थी कि रात-रात में जूता गया कहाँ? किसी को कुछ भी समझ में न आया। जब स्वामी श्री सुबोधानन्दजी यात्रा से लौटे तब पता चला कि उनके साथ क्या घटना घटी। यह भी पता लगा जूता वही ले-गये थे।

ऋषि-मिशन के लिए जवानियाँ भेंट करनेवाले और पग-पग पर कष्ट सहनेवाले ऐसे प्रणवीरों से ही इस समाज की शोभा है। स्मरण रहे कि यह संन्यासी गजटिड आफीसर रह चुके थे और कुछ वर्ष तक आप ही मिाचल प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। आइए! इनके पदचिह्न पर चलते हुए हम सब ऋषि-ऋण चुकाने का यत्न करें।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

हे महर्षि दयानन्द सरस्वती! तुम्हें .....

ने गुरु विरजानंद जी के चरणों में केवल 3 वर्ष (1860 से 1863 तक) विद्या अभ्यास किया और वे देश विदेश में प्रचलित मत-मतान्तरों के विरुद्ध रणक्षेत्र में उतर गए। केवल 20 वर्ष में उन्होंने अपने अथक परिश्रम, पुरुषार्थ और तपोबल से सभी मत-मतान्तरों को वेदार्ष की सत्य विद्या के विषय में सोचने पर मजबूर कर दिया। महर्षि का एक ही निश्चय विचार था कि जितने भी मत-पंथ देश और दुनिया में फैलें हैं वे सब वेद ज्ञान के सत्य सिद्धांतों के लुप्त होने के कारण ही विस्तार को प्राप्त हुए हैं। इसीलिए ऋषिवर ने वेदों के पुनरुद्धार हेतु वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना के लिए आर्य समाज की स्थापना की।

वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और श्रेष्ठ परंपराओं को स्थापति करने के लिए ऋषिवर ने विधर्मियों के साथ अनेक शास्त्रार्थों में विजय प्राप्त करते हुए मानव मात्र को वैदिक धर्म के ध्वज तले आने का निमंत्रण दिया। उस समय यह कार्य पहाड़ को समुद्र तैराने के समान था या ऐसा कहें कि तलवार की धार पर चलना था। पूरा जमाना ऋषिवर का विरोधी बन गया। समूचे विपरीत वातावरण को अनुकूल बनाकर ऋषिवर ने मानवता पर उपकार किया। काशी में मुस्लिम मत के खण्डन से क्रोधित होकर वहां के कुछ मुसलमान बाहुबलियों ने स्वामी जी को समाप्त करने का षड्यन्त्र किया। एक दिन स्वामी दयानन्द गंगा के किनारे ध्यानस्थ पद्मासन पर बैठे थे। थोडी देर में उधर से कुछ मुसलमान गुंडे स्वामी जी के पास आये और उनमें से दो गुण्डों ने स्वामी जी के कंधों को पकड़कर गंगा में डुबाने के लिए उठाकर ले जाने लगे। स्वामी जी तो सामर्थ्यवान बली थे, उन्होंने अपने बाहुओं से दोनों यवनों को ऐसे भींचना शुरू किया कि उनका दम घुटने लगा, वे या अल्लाह या अल्लाह कहकर चिल्लाने लगे। ऋषिवर दोनों को लेकर गंगा के पानी में कूद पड़े और नीचे तक डुबाते चले गये, स्वामी जी कुंभक प्राणयाम के द्वारा पांच मिनट तक भी जल में रह सकते थे। जब गुण्डे छटपटाने लगे तो उन्हें दया आ गयी और वे उन्हें पानी की सतह पर ले आये और कहने लगे हमें संन्यासी समझकर डुबोने आ गये, हम क्षात्रबल से दुष्टों को सबक सिखाना जानते हैं। यह कहकर आगे से इस प्रकार की दुष्टता न करने की हिदायत देकर उन्हें छोड़ दिया। स्वामी जी ब्रह्मतेज और क्षात्रबल तेज के द्वारा प्रचार के रणक्षेत्र में आये थे।

एक बार अनूप शहर में एक दंभी ब्राह्मण उनके लिए भोजन की थाली लाया, स्वामी जी पहले ही भोजन कर चुके थे, उस थाली में पान रखा हुआ था, जब स्वामी जी उस पान को देख रहे थे तो ब्राह्मण ने सोचा कि अब खैर नहीं यह सोचकर वह उल्टे पाँव भाग खड़ा हुआ। प्रयागराज में एक बार किसी ने मिठाई में विष देने का प्रयत्न किया। काशी में पान में हलाहल देने की चेष्टा की गयी। इस प्रकार उन्हें 17 बार विभिन्न प्रकारों से विष देने का प्रयत्न किया गया, निम्न लिखित स्थानों पर प्राण घातक प्रहार किये गये। मेरठ, दानापुर, कर्णवास, फर्रुखाबाद, सोरों, कानपुर, प्रयाग, रामनगर काशी, मिर्जापुर, मुंबई आदि नगरों में उनके प्राण हरण की चेष्टाएं की गई।

महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रचार करते हुए सन् 1868 में कर्णवास पधारे। वहां चक्रांकितों का खण्डन करने पर कर्णसिंह स्वामी से जी अप्रसन्न हो गया और उसने स्वामी जी पर तलवार तान दी। स्वामी जी ने उसे छीनकर जमीन पर टिका कर तोड दी। और कहा यह तलवार कहे तो तुम्हारे शरीर में घुसेड दूं। वहां पर उपस्थित ठाकुर किशन सिंह ने कर्णसिंह से कहा-यदि तूने अब एक भी अपशब्द स्वामी जी को कहा तो फौजदारी हो जायेगी। कर्णसिंह लज्जित हो वहां से चला गया। एक बार स्वामी जी ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे थे, एक विरोधी दल का व्यक्ति तलवार लेकर आया और स्वामी जी पर उसने वार करना चाहा लेकिन स्वामी जी ने जैसे ही आंख खोली और हुंकार भरी तो वह वहां से भाग खड़ा हुआ।

20 अक्तूबर सन् 1873 को स्वामी जी कानुपर पहुंचे, वहां स्वामी जी के व्याख्यान होने वाले थे। वहां का कोतवाल सुल्तान अहमद उनके व्याख्यानों का विरोध कर रहा था फिर भी स्वामी जी के समर्थकों ने उनका उपदेश रखा। इससे चिढ़कर कोतवाल सुल्तान अहमद ने वहां के पौराणिक ब्राह्मणों को उकसाया और उन पर ईंट पत्थर बरसवाये, स्वामी जी को कहीं चोट नहीं पहुंची। इतने में अंग्रेज पुलिस आयी और स्वामी जी के व्याख्यानों को अनुमति दी गयी। मथुरा में पं. देवी प्रसाद डिप्टी कलेक्टर ने स्वामी जी को रोक कर कहा कि आप अपना उपदेश दीजिए और पौराणिकों से शास्त्रार्थ कीजिए, स्वामी जी कलेक्टर के कहने पर रुक गये, जब यह बात शहर में पता चली कि स्वामी दयानन्द शास्त्रार्थ करना चाहते हैं। तो चार पांच सौ चौबे लाठी-डंडे लेकर स्वामी जी को मारने आये। हो हल्ला और शोर सुन कर ठाकुर भूयाल सिंह रिसालदार घबराकर वहां आये और उस बाग का फाटक बंद कर दिया। स्वामी जी के साथ कुछ क्षत्रिय गण भी स्वामी जी की रक्षार्थ वहां पहुंच गये, उन्हें देखकर चौबे समुदाय को भीतर घुसने का साहस नहीं हुआ।

ऐसे अनेकानेक प्राणघातक हमलों का उचित जवाब देते हुए ऋषिवर ने सारी प्रतिकूल परिस्थितियों अनुकूल बनाया तथा संपूर्ण मानवता की भलाई के लिए वेदज्ञान की अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित की। सन् 1885 में राजस्थान के जोधपुर के राजा जसवंत सिंह के दरबार में स्वामी जी ने अचानक पदार्पण किया तभी जोधपुर नरेश नन्ही जान की पालकी को कन्धा देते हुए उन्होंने देख लिया। स्वामी जी अचम्भित हुए और सोचने लगे कि इतनी बडी रियासत का राजा क्षुद्रवैश्या की पालकी को अपना कन्धा देकर उठा रहा है, यह आर्यावर्त के पतन का निकृष्ट प्रसंग है। उन्होंने महाराजा को फटकार लगाते हुए कहा-महाराजा! आप सिंह होकर वैश्या के साथ खेलते हो।" बस यह बात नन्ही जान के कलेजे को चीर कर चली गयी। वहीं उसने फैसला कर लिया कि इस वैरागी को हर हाल में मौत के घाट उतारना है। नन्ही जान ने दरबारी मुसलमानों एवं जागीरदारों से मिलकर रसोइयें के द्वारा स्वामी जी के दूध में संख्यिादि विष दे दिया। स्वामीजी को इस विष के कारण दाह, उल्टियां और शरीर पर फुंसियां आनी शुरु हो गयी, अन्ततः 30 अक्तूबर सन 1883 को ठीक दीपावली के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती की आत्मा शरीर को छोडकर अनन्त में विलीन हो गयी। स्वामी जी ने अपनी एक प्राण ज्योति बुझाकर हजारों दीपकों को प्रज्वलित कर संसार को प्रकाशित किया। उनके एक एक रक्त के कण से हजारों अनुयायियों ने स्वामी के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक अमावस्या पर देश और दुनिया में दीपावली होगी, घर-घर दीए जलेंगे, रोशनी होगी, मिठाइयां बटेंगी और उपहार भी बटेंगे, बम-पटाखे और फुलझडियां भी चलेंगी, किंतु क्या भय-भ्रम के अंधेरों का तिरोहण अब तक संभव हुआ है या इस बार होगा? बाहर के अंधेरे से अंदर का अंधेरा खतरनाक होता है, बाहर की कृत्रिमता के प्रकाश से भीतर की चांदनी नहीं होती, इसलिए बार-बार दिवाली आती है फिर भी अंधेरा नहीं हटता। ऋषिवर का निर्वाण हुए 137 वर्ष हो चुके हैं, उन्होंने सदैव वैदिक ज्ञान के उजाले पर जोर दिया, भय-भ्रम-पाखंड, अंधविश्वास कुरीतियों से समाज को बचाने का महान कार्य किया, उन्होंने मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा दी, यूं तो ऋषि से पूर्व और उनके बाद भी अनेकों महापुरुषों ने भारत तथा विश्व में जन्म लिया, और यह क्रम अनवरत जारी है, लेकिन मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनकर जीना सिखाने वाले, व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया को श्रेष्ठ बनने-बनाने के लिए "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का उद्घोष करने वाले ऋषि दयानंद अनोखे, अनूठे और निराले थे। आज समाज में भ्रम का ज्ञान फैलाने वालों की बहुतायत है, अंधेरा फैलाने वालों का तांता है, लेकिन सत्य का सवेरा तभी आएगा, मनुष्य के भीतर प्रकाश तभी जगमगाएगा, जब मानव समाज ऋषि दयानंद के बताए वेद मार्ग पर चलेगा। इसलिए बाहर की दीवाली से बेहतर है कि हम वेदज्ञान से अपने अंतःकरण को प्रकाशित करें।

वैदिक धर्म के कल्याणकारी मार्ग पर संसार को अग्रसर करने वाले महर्षि दयानंद सरस्वती को शत-शत-नमन।

- आचार्य अनिल शास्त्री

बाल बोध

विद्यार्थी जीवन में प्राणायाम का महत्त्व

सम्पूर्ण संसार की सारी औषधीय शक्ति प्राण में सन्निहित है। प्राण ब्रह्माण्ड का सबसे पवित्र और बलवान तत्व है। प्राणायाम की क्रिया के द्वारा प्राणों को अपने अन्दर धारण करने का अर्थ है कि आप दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति को अपने अन्दर धारण कर रहे हैं। प्राण के अंदर जो औषधीय शक्ति है वह संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। समस्त ब्रह्माण्ड में जितनी औषधियां हैं और उनमें जितनी शक्तियां हैं वह सारी शक्तियां प्राण में विद्यमान हैं। अगर आप श्वास को भीतर धारण कर रहे हैं, तो इसका मतलब आप विश्व की समस्त औषधीय शक्तियों को अपने भीतर धारण कर रहे हैं।

प्राणायाम करते समय अपने भीतर गहरी श्वास भरें। लंबे श्वास लें और फिर बाहर छोड़ें। बार-बार श्वास भरना और बार-बार बाहर छोड़ना। यह क्रिया करते समय पूरी तन्मयता, पूरी एकाग्रता और पूर्ण लयबद्धता श्वासों के साथ होना जरूरी है। मन में एक ही चिंतन लगातार चलता रहे- मेरी आंखों में देखने की शक्ति, मेरे मस्तिष्क में विचारणा शक्ति, धारणा शक्ति और मेधा शक्ति बढ़ रही है। मेरे कानों में सुनने की शक्ति, मेरे घ्राण में सूंघने की शक्ति और मुख में बोलने की शक्ति, कण्ठ में, फेफड़ों में और हृदय में एक दिव्यशक्ति का संचार हो रहा है।

प्राणायाम करना हर आयु वर्ग के लोगों के लिए लाभदायक है। लेकिन विद्यार्थी जीवन में प्राणायाम इसलिए भी महत्वपूर्ण है, जो विद्यार्थी प्रतियोगिता की तैयारी करते हैं उन्हें अपने मन-मस्तिष्क को तरो ताजा रखने के लिए प्राणायाम से जो शक्ति मिलती है वह दुनिया के और किसी टानिक से नहीं मिल सकती। इसलिए आर्य संदेश के इस अंक में इस बार प्राणायाम के विषय में चर्चा करेंगे.....

भ्रामरी प्रणायाम : भ्रामरी प्राणायाम करने के लिए प्रातःकालीन बेला उत्तम है। नित्यक्रिया करने के उपरान्त पवित्र वातावरण में स्वच्छ आसन बिछाकर बैठिए। फेफड़ों में श्वास भरकर मन ही मन तीन बार ओ३म् का उच्चारण कीजिए। भ्रामरी प्राणायाम करते समय आपका ध्यान मस्तिष्क के मध्यभाग में ही टिका रहे। क्योंकि वहां आज्ञा चक्र है, उसे पावर सर्किट (Power Circuit) कहते हैं। शरीर में जो स्पाइनलकोड होता है, जहां से रीड की हड्डी शुरू होती है, वहां ऊर्जा का स्रोत होता है। उसे कुण्डलिनी शक्ति कहते हैं। प्राणायाम निरन्तर करने से वह शक्ति आज्ञाचक्र की ओर से अर्थात् ऊपर की ओर उठती है। *- शेष अगले अंक में*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अभियान - "घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ" के बढ़ते कदम

दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्रों में यज्ञ प्रचार के कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित विभिन्न सेवा प्रकल्पो में घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ एक प्रमुख सेवा का प्रकल्प है। सभा कि यह महत्वपूर्ण योजना आज चारों और दिल्ली एनसीआर के अलावा नजदीकी राज्यों में भी अत्यंत लोकप्रिय और कल्याणकारी सिद्ध हो रही है। सभा द्वारा चलाई जा रही इस योजना के अंतर्गत हर रोज कहीं न कहीं दिल्ली एनसीआर की बस्तियों में यज्ञ अवश्य किया जाता है। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि जो लोग यज्ञ के विषय में बिल्कुल भी नहीं जानते थे, उन लोगों के बीच झुग्गी-बस्तियों में गरीब निर्धन हर आयु वर्ग के लोगों को यज्ञ से जोड़ने का कार्य सभा बहुत तेज गति से कर रही है।

वर्तमान में घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ के अभियान को आगे बढ़ाते हुए सभा द्वारा विशेष रूप से कई टीम इस महान कार्य को पूरी निष्ठा के साथ कर रही हैं एक तरह से पूरे क्षेत्र में संसार का सबसे श्रेष्ठ कर्म यज्ञ की एक लहर उत्पन्न हो गई है। इस कार्य में हवन उत्थान समिति जो की सभा द्वारा संचालित है, दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में सहयोग की टीम जो सभा के निर्देशन में कार्य करती है, मुख्य रूप से दिल्ली सभा के संवर्धक सभी पूरे समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं।

ज्ञात हो कि इस घर-घर यज्ञ घर-घर यज्ञ को जन जन तक पहुंचाने के लिए सभा के कार्यकर्ताओं की टीम पूरे साजो सामान के साथ हर जगह पर यज्ञ करने के लिए पहुंचते हैं, सामग्री, यज्ञ पात्र, माइक, दरियां इत्यादि सारी व्यवस्था अपने साथ लेकर जाती हैं और सभी लोगों को यज्ञ के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्वरूप को बता कर उनमें यज्ञ के प्रति लगाव पैदा करते हैं। परिणाम स्वरूप सैकड़ों की संख्या में स्त्री-पुरुष और बच्चे यज्ञ में भाग लेते हैं, आहुति देते हैं, स्वाहा स्वाहा करते हैं और गायत्री मंत्र का उच्चारण भी करते हैं। कुछ जगहों पर माताएं बहने लोकगीत और भजन भी गाती हैं इसके साथ साथ अपने घरों में यज्ञ करने के लिए भी अनुरोध करते हैं, अपने बच्चों के जन्मदिन पर विवाह की वर्षगांठ पर और अनेक अन्य शुभ अवसरों पर यज्ञ करने के लिए संकल्पित भी होते हैं और दूसरे स्थानों पर यज्ञ कराने के लिए भी प्रयास करते हैं। इस तरह से यज्ञ हर घर में और घर घर में लगातार पहुंच रहा है।

स्वास्थ्य रक्षा

आरोग्यता का खजाना है तुलसी का पौधा

.....आयुर्वैदिक औषधियों में तुलसी एक अत्यंत उपयोगी वनस्पति है। तुलसी का पौधा लगभग सभी घरों में आसानी से पाया जाता है। हालांकि कुछ लोग इस महत्वपूर्ण औषधि का प्रयोग न करके केवल इसकी पूजा में ही लगे रहते हैं, जबकि तुलसी एक ऐसी औषध है जो एक नहीं कई बीमारियों में उपयोग की जाने वाली अचूक औषधि है-जैसे हिचकी, खांसी, पित्तदोष, श्वास, वात-पित्त-कफ को संतुलित करने के काम करती है। तुलसी से मुंह की दुर्गन्ध भी नष्ट होती है। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है तुलसी के गुण एवं प्रयोग। - सम्पादक

गतांक से आगे -

8) इण्ट्राटेकिप्पल कैंसर से पीड़ित एक रोगी पर ऑपरेशन तथा अन्य अनेक उपचार करने के बाद अन्त में आशा छोड़कर डॉक्टरों ने घोषित किया कि रोगी का यकृत खराब हो रहा है। यक्ष्मा में भी वृद्धि हो रही है। अब यह रोग लाइजाज है। उसी समय एक वैद्य ने उक्त विधान के विरुद्ध चुनौती दी। रोगी को पांच सप्ताह तक केवल तुलसी का सेवन कराया, फलस्वरूप वह इतना स्वस्थ हो गया कि एक मील तक पैदल चल सकता था।

9) तुलसी किडनी की कार्यशक्ति में वृद्धि करती है। तुलसी के रस में शहद मिलाकर देने से एक केस में किडनी की पथरी छः माह के निरन्तर उपचार से बाहर निकल गई थी।

10) हृदय रोग से पीड़ित कई रोगियों के हाई ब्लडप्रेशर तुलसी के उपचार से सामान्य हुए हैं। हृदय की दुर्बलता कम हो गई है और रक्त में चर्बी की वृद्धि रुकी है। जिन्हें ऊंचाई वाले स्थानों पर जाने की मनाही थी, ऐसे अनेक रोगी तुलसी के नियमित सेवन के बाद आनन्दपूर्वक ऊंचाई वाले स्थानों पर जाने में समर्थ हुए हैं।

11) बच्चों को तुलसीपत्र देने के साथ सूर्य-नमस्कार करवाने और सूर्य को अर्घ्य दिलवाने के प्रयोग से बुद्धि में विलक्षणता आती है।

12) सफेद दाग और कुष्ठ के अनेक रोगियों को तुलसी के उपचार से अद्‌भुत लाभ हुआ है।

13) प्रतिदिन प्रातःकाल खाली पेट पानी के साथ तुलसी की पांच-साथ पत्तियों का सेवन करने से बल, तेज और स्मरण शक्ति बढ़ती है। तुलसी के काढ़े में थोड़ी शक्कर मिलाकर पीने से स्फूर्ति आती है और थकावट दूर हो जाती है। जठराग्नि प्रदीप्त रहती है। इसके रस में नमक मिलाकर उसकी बूंदें नाक में डालने से मूर्च्छा दूर होती है, हिचकियां भी शान्त हो जाती हैं।

14) तुलसी ब्लड-कॉलेस्ट्रोल को बहुत तेजी के साथ सामान्य बना देती है। तुलसी के नित्य सेवन से एसिडिटी दूर होती है। पेचिश, कोलाइटिस आदि मिट जाते हैं।

15) सिर का दर्द, जुकाम, सर्दी, मेदवृद्धि, सिरदर्द आदि में तुलसी गुणकारी है। इसका रस, अदरक रस एवं शहद समभाग में मिश्रित करके बच्चों को चटाने से उनके कुछ रोगों-विशेषकर सर्दी, दस्त, उलटी और कफ में लाभ होता है। हृदयरोग और उसकी अनुषाङ्गिक निर्बलता तथा बीमारी में तुलसी के उपयोग से आश्चर्यजनक सुधार होता है।

16) वजन बढ़ाना या घटाना हो तो तुलसी का सेवन करें, इससे शरीर स्वस्थ और सुडौल बनता है। मन्दाग्नि कब्जियत, गैस आदि रोगों के लिए तुलसी रामबाण औषधि सिद्ध हुई है।

17) तुलसी की क्यारी के पास प्राणायाम करने से सौन्दर्य, पाउडर की तरह चेहरे पर रगड़ने से चेहरे की कान्ति बढ़ती है और चेहरा सुन्दर दिखता है।

18) मुहासों के लिए भी तुलसी अत्यन्त उपयोगी है। तांबे के बरतन में नींबू के रस को चौबीस घंटे तक रख छोड़िए। फिर उसमें इतनी ही मात्रा में काली तुलसी का रस तथा काली कसौंड़ी (कसौंजी) का रस मिलाइए। इस मिश्रण को धूप में सुखाकर गाढ़ा कीजिए। इस लेप को चेहरे पर लगाने से धीरे-धीरे चेहरा स्वच्छ, चमकदार, सुन्दर, तेजस्वी बनेगा तथा कान्ति बढ़ेगी।

19) काली मिर्च तुलसी और गुड़ का काढ़ा बनाकर उसमें नींबू का रस मिलाकर दिन में दो-दो या तीन-तीन घंटे के अन्तर से गर्म-गर्म पिएं। फिर कम्बल ओढ़कर सो जाएं। यह काढ़ा मलेरिया को दूर करता है।

20) श्लेष्मक ज्वर (इनफ्लुएंजा) के रोगी को तुलसी का बीस ग्राम रस, अदरक का चालीस ग्राम रस तथा शहद मिलाकर दें।

तुलसी की जड़ कमर में बांधने से गर्भवती स्त्रियों को लाभ होता है। प्रसव-वेदना कम होती है और प्रसूति भी सरलता से हो जाती है।

21) तुलसी की पत्तियों का रस बीस ग्राम चावल के मांड के साथ सेवन करने से तथा दूध भात या घी-भात का पथ्य लेने से प्रदररोग दूर होता है।

22) तुलसी की पत्तियों को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद-खाज मिट जाती है।

23) तुलसी का पाउडर तथा सूखे आंवलों का पाउडर पानी में भिगो कर रख दीजिए, प्रातःकाल छानकर उस पानी से सिर धोने से सफेद बाल काले हो जाते हैं तथा बालों का झड़ना रुक जाता है।

24) तुलसी और अदरक का रस शहद के साथ लेने से उलटी में लाभ होता है। पेट में दर्द होने पर तुलसी की ताजी पत्तियों का दस ग्राम रस पिएं। इस तरह आरोग्य-दान करने में तुलसी बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमें चाहिए कि जगह-जगह तुलसी के पौधे लगाकर तथा तुलसी के बीज डालकर तुलसी का वृन्दावन बनाएं, वातावरण को शुद्ध, पवित्र कर स्वस्थ करें तथा स्वस्थ रहें।

निराशा - कारण एवं निवारण

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

परीक्षा भवन में बड़ों-बड़ों के हाथ पैर फूल जाते हैं। इसीलिये ईसामसीह ने कहा था- हे ईश्वर ! तू मुझे परीक्षा में मत डाला परन्तु स्मरण रहे- परीक्षा की भट्टी में ही तप कर सोना कुन्दन और पीतल काला हो जाता है। परीक्षा की सीढ़ियां चढ़ने से ही सफलता के शिखर पर पहुँचा जा सकता है। समाधान- परीक्षा को हौवा न बनायें। सभी का बौद्धिक स्तर एक समान नहीं होता और सभी की सभी विषयों मैं रूचि भी नहीं होती। किसी व्यक्ति का मूल्यांकन केवल परीक्षा से नहीं किया जा सकता। विद्यार्थी काल में महान् वैज्ञानिक आइन्स्टीन को अध्यापक ने उसकी माता को कहा- यह बालक पढ़ नहीं सकता। इसे विद्यालय से निकाल लो। मनुष्य अनेक प्रकार की बुद्धि लेकर उत्पन्न हुआ है। किसी विषय में अनुत्तीर्ण या कम अंक आना मन्दबुद्धि का लक्षण नहीं है। सर्व प्रथम असफलता के कारणों को जानकर उधर ध्यान देने से अगले वर्ष उससे भी अधिक अंक प्राप्त किये जा सकते है।

मन की इच्छा, आशाओं का विघात या पूरा न होने से मन में जो खिन्नता, निष्क्रियता और उत्साहहीनता आ जाती है, उसे निराशा कहते हैं। निराश व्यक्ति को अपना जीवन भार लगने लगता है। कार्य करने की शक्ति कुंठित हो जाती है और आत्म विश्वास डगमगाने लगता है। निराशा के कारणों को जानकर फिर उनका समाधान करना उचित रहेगा। यहाँ युवावर्ग में जो निराशा के कारण सम्भावित हैं उन्हीं पर ध्यानाकर्षण किया जायेगा।

परीक्षा में कम अंक या अनुत्तीर्ण हो जाना

परीक्षा भवन में बड़ों-बड़ों के हाथ पैर फूल जाते हैं। इसीलिये ईसामसीह ने कहा था- हे ईश्वर ! तू मुझे परीक्षा में मत डाल, परन्तु स्मरण रहे- परीक्षा की भट्टी में ही तप कर सोना कुन्दन और पीतल काला हो जाता है। परीक्षा की सीढ़ियां चढ़ने से ही सफलता के शिखर पर पहुँचा जा सकता है। समाधान- परीक्षा को हौवा न बनायें। सभी का बौद्धिक स्तर एक समान नहीं होता और सभी की सभी विषयों मैं रूचि भी नहीं होती। किसी व्यक्ति का मूल्यांकन केवल परीक्षा से नहीं किया जा सकता। विद्यार्थी काल में महान् वैज्ञानिक आइन्स्टीन को अध्यापक ने उसकी माता को कहा- यह बालक पढ़ नहीं सकता। इसे विद्यालय से निकाल लो। मनुष्य अनेक प्रकार की बुद्धि लेकर उत्पन्न हुआ है। किसी विषय में अनुत्तीर्ण या कम अंक आना मन्दबुद्धि का लक्षण नहीं है। सर्व प्रथम असफलता के कारणों को जानकर उधर ध्यान देने से अगले वर्ष उससे भी अधिक अंक प्राप्त किये जा सकते है।

किसी अच्छे कार्य में विघ्न बाधा आना

एक विचारक का कहना है- श्रेयांसि बहु विघ्नानि। अच्छे कार्यो में बाधा आने की सम्भावना रहती ही है। सामान्य लोगों को यह सहन नहीं होता कि अमुक व्यक्ति आगे क्यों बढ़ रहा है। वे उसका उपहास करते हैं। अनेक अड़चनें डालते हैं। परन्तु धीर और शूरवीर व्यक्ति उनकी परवाह न कर अपने ध्येय पथ पर आगे बढ़ता ही जाता है। कवि कहता है -

प्रारम्यते न खलु विघ्न भयेन नीचै:
प्रारम्य विघ्न विहता विरमन्ति मध्यत:
विघ्नै: पुन: पुनरपि प्रतिहन्यमाना:
प्रारन्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।।

निम्न श्रेणी के लोग विघ्नों से डर कर किसी अच्छे कार्य को प्रारम्भ करते ही नहीं। मध्यम श्रेणी वाले प्रारम्भ तो कर देते हैं परन्तु विघ्न बाधाओं के आ जाने पर उसे मध्य में ही छोड़ देते हैं। जो उत्तम कोटि के मनुष्य हैं वे बार-बार विघ्न आने पर भी किसी अच्छे कार्य को प्रारम्भ कर, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं।

प्रेम में असफलता

यह एक गम्भीर विषय है। युवावस्था में स्त्री पुरुष का एक दूसरे के प्रति आकर्षित होना स्वभाविक है। इसी को नियन्त्रित करने के लिये विवाह प्रथा का प्रारम्भ हुआ। पिंगलाचार्य के छन्दशास्त्र का पहला सूत्र है-'घी श्री स्त्रीम' इसमें तीनों गुरु अक्षर हैं। इसका एक अर्थ यह भी है कि पहले बुद्धि का विकास कर धनार्जन और फिर विवाह की कामना करें। विद्यार्थी जीवन में शारीरिक और बौद्धिक विकास पर ही ध्यान केन्द्रित रखना चाहिये। आजकल इण्टरनेट ने युवकों का ध्यान विचलित कर दिया है। कोई कार्य समय पर ही प्रशंसित माना जाता है। इसलिये युवक-युवतियों को अपनी जीवन ऊर्जा रचनात्मक कार्यो में लगानी चाहिये।

- शेष अगले अंक में

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

..... In 1920 Mahatma Gandhi started the Non cooperation Movement. One of the objects of this Movement was to boycott existing schools and colleges. Fiery speeches were made to the students to leave their schools and colleges. Most of them acted on this advice. The result was that some of the institutions in the Punjab had to be closed down. Then the Congress leaders made an appeal to the students of the D.A.V. College to strike. This was too much for Mahatma Hans Raj. He could not bear to see the college for which he had done so much close down. .....

Continue From Last issue

For sometime Mahatma Hans Raj remained busy with these things. Then came very sad news from Malabar. It was about the forcible conversion of some Hindus to Islam by the Moplas. Mahatma Hans Raj enquired into the matter-and issued an appeal for funds. But it was very coldly received by the Press. Still he persevered, and felt very happy when his own old mother sent a contribution. He is said to have remarked at the time, " I will now succeed in my work because it has been blessed by my mother." After this he received several contributions. Then he sent volunteers to Malabar. They not only distributed relief among the victims but also succeeded in persuading the Hindus to take the converts back into their fold. In this way Mahatmaji succeeded in what he had planned.

The doing of the Moplas in Malabar opened the eyes ofthe Hindus. They also made Mahatma Hans Raj think deeply about the matter. He felt that the Hindus should be united. So he drew up his programme for Hindu Sanghathan. He appealed to the Hindus to have the same respect for the Vedas as the Mohammadans have for the Quran and the Christians for the Bible. He said in a speech which he delivered, "Letjhe Hindus learn to pray together like the Mohamadans. Let them look after their widows and orphans as other communities do. Let them remember that Hinduism should not be confined to India only, but should become a world religion. The Hindus should learn Hindi and make it the most important language in India. They should work for the uplift of the depressed classes and do away with the false distinctions of caste. Every Hindu should feel that all Hindus are his brothers." If today there exists a strong Hindu feeling in India, much of the credit for it goes to Mahatma Hans Raj.

In 1923 Mahatma Hans Raj became connected with another movement. It was known as the Shuddhi Movement. Its purpose was to convert people to Hinduism. For this he was much criticized. He Was described as a person who was trying to destroy Hindu-Muslim unity. But he thought otherwise. He believed that as it is the right of every Christian and Mohammadan to convert people to his own religion so should it be the right of a Hindu. This movement had its headquarters at Agra, which Mahatmaji visited personally.

In the United Provinces ofAgra and Oudh there lived some Rajputs who were Mohammadans in name only. Otherwise they followed many Hindu customs. They burnt their dead just asthe Hindus do. They married according to Hindu rites. They also performed many other Hindu ceremonies. An attempt was made, therefore, to bring them back into the fold of Hinduism. In this matter the reformers were greatly helped by the Rajputs themselves. Even the All-India Rajput Sabha passed a resolution pressing for their conversion.

Mahatma Hans Raj had to work very hard there. The result was that he fell ill. For some months he suffered very badly. He slowly recovered, and as soon as he got well, he took the field again.

The first thing he did was to attend the Unity Conference. This was held at Delhi. Its purpose was to bring the Hindus and the Mohammadans together. Mahatma Hans Raj was one of those who were invited to' attend. When he went there he made a speech. In it he said some very noble things. One of the remarks he made in his address was, "A change of heart is necessary on both sides before there can be any unity." Truer words than these were never spoken.

In 1924 Mahatma Hans Raj was made the President of All India Shuddhi Sabha. He made a great contribution to the Shuddhi movement. He shifted his headquarters to Agra in order to persuade Malkana Rajputs who had converted to Islam to return to the Hindu fold. A large number of volunteers worked under him. Swami Shradhanand and some other leaders ofArya Samaj and Sanatan Dharma Sabha also supported this movement.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा 1966 के गौ रक्षा आंदोलन के बलिदानियों को श्रद्धांजलि दी गई और सरकार से मांग की गई कि गौ रक्षा के लिए कठोर नियम बनाए जाए। राष्ट्र निर्माण पार्टी के महासचिव डॉ आनंद कुमार द्वारा भी गौ रक्षा के लिए गौ हत्यारों को फांसी की सजा देने की मांग की गई।

इस मौके पर डासना के देवी मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद ने कहा कि गो-माता के साथ क्रूरतापूर्ण, हिंसक और अमानवीय घटनाओं के घिनौनेपूर्ण कृत्यों पर लगाम लगाये जाने की आवश्यकता लम्बे समय से महसूस की जाती रही है जिसके लिए अब राष्ट्रीय स्तर पर कठोर कानून बनाया जाना चाहिए। इस अवसर पर गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के संचालक एवं प्राचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री बृहस्पति आर्य, आर्य नेत्री कल्पना आचार्य, विम्मी अरोड़ा आर्य, कुंवरपाल शास्त्री भी उपस्थित रहे। आपको बता दें कि 7 नंवबर 1966 में गोरक्षा महाभियान समिति की अगुवाई में देश के संत समाज द्वारा दिल्ली के चांदनी चौक स्थित आर्य समाज दीवान हाल से गोरक्षा के लिए एक विशाल सत्याग्रह आरम्भ किया गया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा आंदोलन को दबाने के लिए निहत्थे संतों और अन्य प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने के आदेश दे दिए थे। इस गोलीकांड में सैकड़ों साधु संत और गोरक्षक मारे गए, और हजारों को तिहाड़ जेल में ठूंस दिया गया।

पृष्ठ 2 का शेष

जो बायडेन भारत के लिए कितना ....

ट्रंप के शासन के दौरान चीन को लेकर अमेरिका का रुख काफी कड़ा था और इस लिहाज से भारत के लिए नीति अनुकूल थी। लद्दाख में चीन के साथ भारत के बढ़ते तनाव में भी अमेरिका ने खुलकर भारत का साथ दिया था। लेकिन अब इसमें थोडा बदलाव आएगा, चीन को लेकर ट्रंप और बायडेन दोनों की टोन, भाषा और एप्रोच में अंतर है और इसका भारत और अमेरिका के संबंधों पर असर पड़ सकता है।

क्योंकि इस साल जून के महीने में जो बायडेन ने कश्मीरियों के पक्ष में बयान देते हुए कहा था कि कश्मीरियों के सभी तरह के अधिकार बहाल होने चाहिए। क्योंकि डेमोक्रैट्स थोड़ा ह्यूमन राइट्स की बातें ज्यादा करते हैं, वामपंथियों का दबदबा ज्यादा है। लेकिन कुछ भी हो बायडेन कश्मीर को लेकर और धारा 370 खत्म करने के भारत के फैसले को उलटने के लिए दबाव नहीं बना पाएंगे। इस तरह की चीजें केवल बयानों तक ही सीमित रहेंगी और इनका असर दोनों देशों के रणनीतिक संबंधों पर नहीं दिखेगा। क्योंकि जैसा हमने पहले कहा था कि अमेरिका में सरकारें बदलती हैं, नीतियाँ नहीं, बस हमें ट्रम्प थोडा इस वजह से पसंद आता था क्योंकि वह खुलकर इस्लाम और आतंक पर बोलता था। मोदी को खुलकर अपना दोस्त कहता था इसी कारण भारत के वामपंथी, लिबरल गैंग ट्रम्प की आलोचना करते थे। हो सकता है कल जब बायडेन का भारत दौरा हो और मोदी और बायडेन एक दूसरे को दोस्त कहें तो बायडेन को भी इसी आलोचना का शिकार होना पड़ सकता है। - ***सम्पादक***

वैदिक साहित्य विक्रेताओं के लिए विशेष सूचना

ऐसे समस्त महानुभाव जो आर्यसमाज के विभिन्न कार्यक्रमों/वार्षिकोत्सवों में जा-जाकर साहित्य विक्रय का कार्य करते हैं तथा आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य साहित्य नहीं बेचते। अर्थात् जिनकी आजीविका कवेल आर्यसमाज के साहित्य को विभिन्न स्थानों पर होने वाले आयोजनों में जाकर बेचने पर ही निर्भर है, उनके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष व्यवस्थाएं बनाने का प्रयास कर रही है।

अत: ऐसे समस्त वैदिक साहित्य विक्रेताओं से निवेदन है कि वे योजना का लाभ उठाने के लिए अपना पंजीकरण कराएं। पंजीकरण कराने के लिए एक प्लेन कागज पर आवेदन पत्र के साथ अपना नाम, पता, मोबाईल नं. तथा इस कार्य में आने वाली समस्याओं और उन्हें दूर करने के उपाय/सुझाव लिखकर **"महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001"** के पते पर लिखकर भेजें। - ***महामन्त्री***

शोक समाचार

वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा जी का निधन

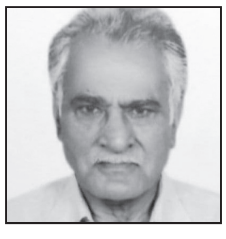

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक, हरि नगर के प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष आमन्त्रित सदस्य श्री वी.के. मल्होत्रा जी का दिनांक 10 नवम्बर, 2020 को लगभग 80 वर्ष की आयु में हृदयाघात से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ बेरी वाला बाग शमशान घाट पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्वर्धकों द्वारा कराया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्य साहित्य सेवी विश्वकोश का प्रकाशन

श्रीमन्नस्ते, आर्यसमाज और वैदिक साहित्य का प्रणयन करने वाले सर्वात्मना समर्पित विद्वान् लेखकों, शोधकर्त्ताओं, कवियों, निबन्धकारों तथा अन्य विधाओं में लिखने वाले मनीषियों को वर्तमान पीढ़ी के लोग प्राय: भूलने लगे हैं। यदि समय रहते प्रामाणिक जानकारी एक स्थान पर एकत्र नहीं की तो हमारे साहित्यकारों और विद्वानों के विषय में या तो अनर्गल और भ्रान्तिपूर्ण सूचनाएँ प्रकाशित होती रहेंगी अथवा भावी पीढ़ियां उन्हें भूल जायेंगी।

ओम् प्रतिष्ठान वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में सहायक विश्व के सभी साहित्य सेवियों का संक्षिप्त परिचय "आर्य साहित्य सेवी विश्व कोश" के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है। दस खण्डों में प्रकाश्य विश्व कोश में लगभग :-

- पांच हजार साहित्य सेवियों के सचित्र परिचय के साथ उनके लेखन-कार्य का संक्षिप्त विवरण
- तीन सौ आर्यसमाज-विषयक, शोधकर्त्ताओं तथा उनके शोध प्रबन्धों की सूची
- दो सौ शास्त्रार्थ महारथियों की सूची
- पांच सौ आर्य पत्र-पत्रिकाओं की सूची व संक्षिप्त विवरण
- पांच सौ प्रकाशन संस्थानों, जिन्होंने आर्य साहित्य का प्रकाशन किया का विवरण होगा।

यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि गत 14-15 वर्षों के कठिन श्रम से प्रस्तावित विश्वकोश का 80 प्रतिशत सम्पादन कार्य हो चुका है। आशा है, इस वर्ष के अंत तक सम्पूर्ण विश्व कोश प्रकाशन के लिए प्रेस में चला जाएगा।

ओम प्रतिष्ठान द्वारा बनायी गयी सूची के शेष आर्य साहित्य सेवियों, जिनमें आप भी हैं, से प्रार्थना की जा रही है कि आप स्वयं का तथा अपने परिचित आर्य साहित्य सेवियों के परिचय अविलम्ब भिजवाने का कष्ट करें। लेखक परिचय, साहित्य परिचय तथा चित्र प्रकाशन के लिए कोई शुल्क देय नहीं है।

- मूलचन्द गुप्त, अध्यक्ष, ओम प्रतिष्ठान
कुसुमालय, बी-1/27/रघु नगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-45, मो. 9650886070
ईमेल : ompratisthan@gmail.com

पृष्ठ 3 का शेष

क्या पत्रकारिता का गला दबाया जा ....

इंडियन एक्सप्रेस समूह राजीव गांधी का मुख्य निशाना रहा। जैसे आज जी न्यूज और रिपब्लिक टीवी हैं, उस दौरान भी यही होता था। सैकड़ों की तादाद में सरकारी अधिकारी जब चाहे, एक्सप्रेस पर छापेमारी कर देते थे। इनमें आयकर, कस्टम जैसे विभागों के नुमाइंदे भी शामिल होते थे। एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के तत्कालीन महासचिव एच.के. दुआ ने कहा था कि सरकार जानबूझकर देश के प्रमुख समाचारपत्रों को डराने की कोशिश कर रही है। यह प्रेस की आजादी के लिए खतरा है और इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। तब कहा गया कि ये जाँच तो प्रिंटिंग उपकरणों को खरीदने में मुद्रा कानूनों का उल्लंघन किया गया है, जिसकी जांच हो रही है। यही नहीं नेहरू जी ने मशहूर शायर मजरूह सुल्तानपुरी को गिरफ्तार कराया। उनका गुनाह बस इतना था कि वह नेहरू की आलोचना कर बैठे थे। उन्होंने एक साल जेल में बिताया। कथित तौर पर टाइम्स ऑफ इंडिया में उनका एक कॉलम भी बंद करा दिया गया क्योंकि यह नेहरू का विरोध करता था।

लेकिन मामला सिर्फ इतने ही नहीं अन्ना के आन्दोलन के समय मीडिया पर प्रतिबंध लगाये गये यहां तक कि 2019 के आम चुनाव में कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र में सोशल मीडिया पर नियंत्रण का वादा तक किया था। शायद यही कारण है एनडीटीवी से लेकर कई चौनल और अखबार आज भी चापलूसी कर रहे हैं, इनके पाप पर पर्दा डाल रहे हैं और जो इनके खिलाफ आवाज उठाता है उसे अर्नब गोस्वामी कंगना रानौत की तरह चुप कराने की कोशिश की जा रही है।

- ***राजीव चौधरी***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 नवम्बर, 2020 से रविवार 15 नवम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12-13/11/2020 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 नवम्बर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल

www.AryaSandeshTV.com

24 घंटे चलने वाला आपका अपना चैनल

प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 योग एवं स्वास्थ्य
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन बेला
प्रात: 9:00 श्री राम कथा
प्रात: 9:30 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 योग एवं स्वास्थ्य
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव
सायं 5:00 योग एवं स्वास्थ्य
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 भजन बेला
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात:4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। - ***व्यवस्थापक***

प्रतिष्ठा में,

आप भी बनें यज्ञमित्र

कम से कम 12 नए परिवारों में यज्ञ कराएं

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सतीश चड्ढा जी

महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मो. 954004141, 9313013123

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष 2021 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1000/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। साइज 20'×30' सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

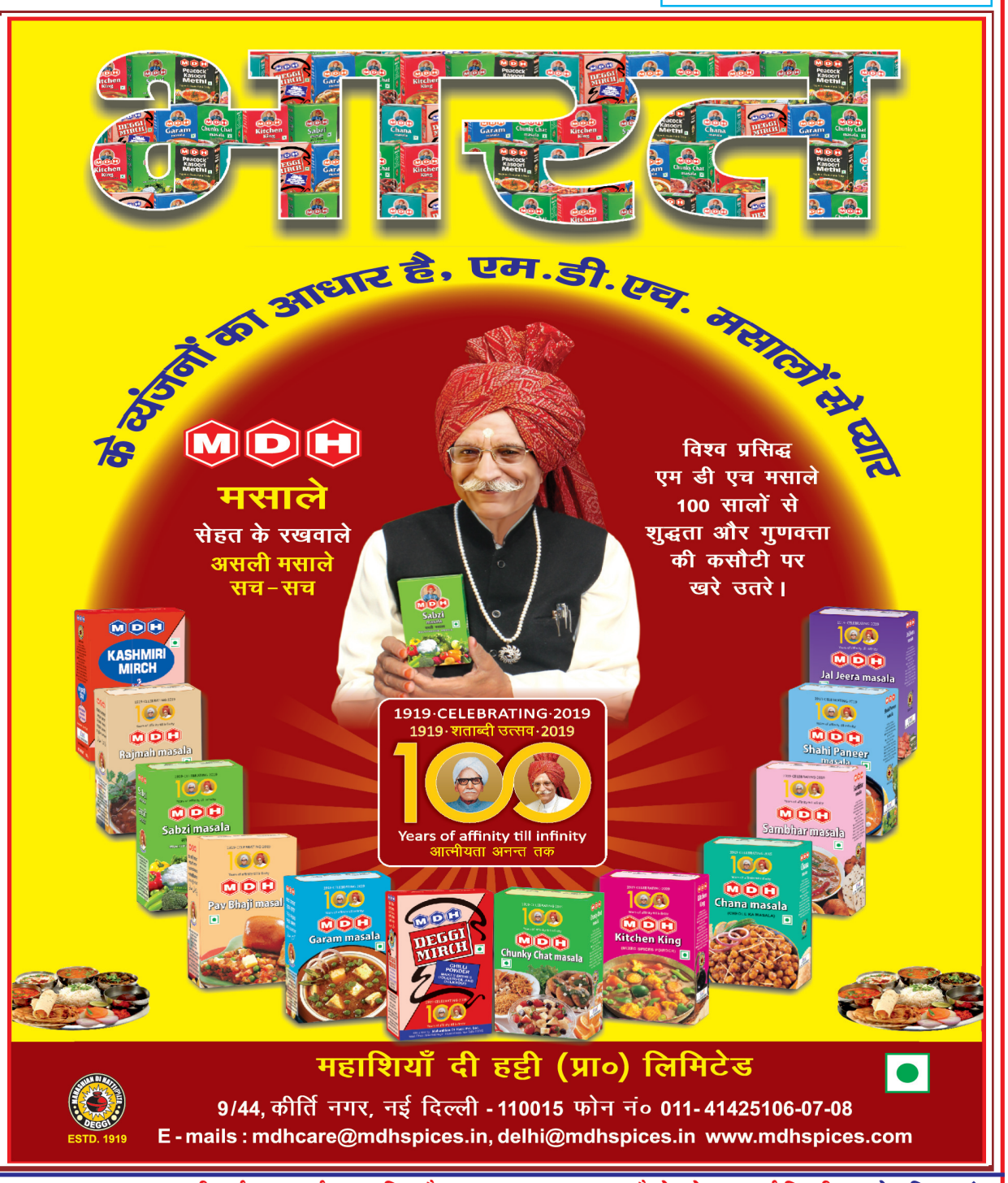

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह